

न्यायालय — पंकज शर्मा, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, गोहद, जिला भिण्ड, म.प्र.
(आप.प्र.क.क. :- 28/2012)
(संस्थित दिनांक :- 24/01/2012)

म.प्र. राज्य,
द्वारा आरक्षी केन्द्र :- गोहद
जिला-भिण्ड., म.प्र.

..... अभियोजन ।

/// विरुद्ध ///

01. केदार सोनी पुत्र मन्दूलाल सोनी उम्र 52 वर्ष
 02. संतोष सोनी पुत्र बालकिशन सोनी उम्र 44 वर्ष
 03. मुकेश सोनी पुत्र बालकिशन सोनी उम्र 41 वर्ष
 04. कुलदीप सोनी पुत्र बालकिशन सोनी उम्र 37 वर्ष
 05. सत्यम सोनी पुत्र संतोष सोनी उम्र 23 वर्ष
- निवासीगण-वार्ड क्रमांक 12 बड़ा बाजार गोहद, जिला-भिण्ड (म.प्र.)

..... अभियुक्तगण ।

/// निर्णय ///

(आज दिनांक : 20/12/2016 को घोषित)

01. अभियुक्तगण केदार, संतोष, कुलदीप, सत्यम एवं मुकेश पर भा.द.सं. की धारा :- 294, 147, 323/149, 324/149, 336 एवं 506 भाग II के अन्तर्गत आरोप हैं कि आरोपीगण ने दिनांक : 03/01/2012 को रात्रि लगभग 09:30 बजे वार्ड क्रमांक 12 बड़ा बाजार गोहद में, जो कि एक लोकस्थान के समीप एक स्थान है, फरियादी हिमांशु को माँ-बहन की अश्लील गालियाँ देकर क्षोभ कारित किया, सहअभियुक्तगण के साथ मिलकर लाठियों से सुसज्जित होकर विधि विरुद्ध जमाव का गठन कर, उक्त विधि विरुद्ध जमाव के सामान्य उद्देश्य के अग्रसरण में बल या हिंसा कारित कर बलवा किया, सहअभियुक्तगण के साथ मिलकर फरियादी हिमांशु एवं आहत सुनील की मारपीट करने का सामान्य उद्देश्य बनाया और उसके अग्रसरण में अभियुक्त कुलदीप ने दाँतो से सुनील को काटकर स्वेच्छया उपहति कारित की एवं सहअभियुक्तगण ने लाठी एवं पत्थरों से मारपीट कर स्वेच्छया उपहति कारित की, उपेक्षापूर्वक या उतावलेपन से पत्थर फैंककर फरियादीगण का वैयक्तिक क्षेम संकटापन्न किया एवं फरियादी हिमांशु को जान से मारने की धमकी देकर संत्रास कारित कर आपराधिक अभित्रास कारित किया ।

02. प्रकरण में उभय पक्ष के मध्य राजीनामा हो जाना सारवान निर्विवादित एक तथ्य है ।

03. अभियोजन कथा संक्षिप्त में इस प्रकार है कि दिनांक : 03/01/2012 को रात्रि

लगभग 09:30 बजे वार्ड क्रमांक 12 बड़ा बाजार गोहद में, आरोपीगण द्वारा आहत हिमांशु से गाली-गलौच करने, उसकी मारपीट करने, सुनील को दाँतों से काटकर उपहति कारित करने, पत्थर फैंककर मारने एवं जान से मारने की धमकी देने की मौखिक रिपोर्ट फरियादी गिराज द्वारा उसी दिनांक को थाना गोहद पर की जाने पर, थाना गोहद में आरोपीगण के विरुद्ध अपराध क्रमांक 05/2012 अन्तर्गत धारा 147, 294, 323, 336 एवं 506 भाग।। भा.द.सं. पंजीबद्ध कर प्रथम सूचना रिपोर्ट लेखबद्ध की गई। फरियादी सुनील के मेडीकल परीक्षण में मानव दाँतों से काटने की चोट होने का उल्लेख होने से आरोपीगण के विरुद्ध धारा 324 भा.द.सं. का इजाफा किया गया। विवेचना के दौरान घटनास्थल का नक्शा मौका बनाया गया। आरोपीगण को गिरफ्तार कर गिरफ्तारी पंचनामे बनाये गये। फरियादी गिराज किशोर, आहतगण हिमांशु एवं सुनील, साक्षी रमाकान्त शर्मा के कथन लेखबद्ध किये गये तथा विवेचना पूर्ण कर अभियोग पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किया।

04. अभियुक्तगण केदार, संतोष, कुलदीप, सत्यम एवं मुकेश पर भा.द.सं. की धारा :- 294, 147, 323/149, 324/149, 336 एवं 506 भाग।। का आरोप विरचित कर पढ़कर सुनाये, समझाये जाने पर अभियुक्तगण ने अपराध करना अस्वीकार किया। आरोपीगण का अभिवाक् अंकित किया गया। आरोपीगण एवं फरियादी/आहतगण हिमांशु एवं सुनील के मध्य राजीनामा हो जाने के कारण अभियुक्तगण को धारा 294, 323/149 एवं 506 भाग।। भा.द.सं. के आरोप से दोषमुक्त किया जा चुका है।

05. अभियोजन साक्ष्य में अभियुक्तगण के विरुद्ध प्रकट हुए तथ्यों के संदर्भ में उनका धारा 313 दं.प्र.सं. के अन्तर्गत परीक्षण किये जाने पर उन्होंने अभियोजन साक्ष्य में प्रकट हुए तथ्यों के सत्य होने से सारतः इंकार करते हुए बचाव में स्वयं को निर्दोष होना तथा झूठा फंसाया जाना व्यक्त किया।

06. न्यायिक विनिश्चय हेतु प्रकरण में मुख्य विचारणीय प्रश्न निम्नलिखित है :-

01. क्या आरोपीगण ने दिनांक : 03/01/2012 को रात्रि लगभग 09:30 बजे वार्ड क्रमांक 12 बड़ा बाजार गोहद में, सहअभियुक्तगण के साथ मिलकर लाठियों से सुसज्जित होकर विधि विरुद्ध जमाव का गठन कर, उक्त विधि विरुद्ध जमाव के सामान्य उद्देश्य के अग्रसरण में बल या हिंसा कारित कर बलवा किया?

02. क्या आरोपी कुलदीप ने उक्त दिनांक, समय एवं स्थान पर सहअभियुक्तगण के साथ मिलकर फरियादी आहत सुनील की मारपीट करने का सामान्य उद्देश्य बनाया और उसके अग्रसरण में अभियुक्त कुलदीप ने दाँतों से सुनील को काटकर स्वेच्छया उपहति कारित की?

03. क्या आरोपीगण ने उक्त दिनांक, समय एवं स्थान पर उपेक्षापूर्वक या उतावलेपन से पत्थर फैंककर फरियादी का वैयक्तिक क्षेम संकटापन्न किया?

04. अंतिम निष्कर्ष?

सकारण व्याख्या एवं निष्कर्ष
विचारणीय बिन्दु क्रमांक :- 01 लगायत 03

07. साक्ष्य विवेचना में सुविधा की दृष्टि से एवं साक्ष्य के अनावश्यक दोहराव से बचने के लिए विचारणीय बिन्दु क्रमांक 01 लगायत 03 का निराकरण एक साथ किया जा रहा है।

08. फरियादी गिराज किशोर अ.सा.04 का उसके न्यायालयीन अभिसाक्ष्य में कहना है कि वह आरोपीगण मुकेश, संतोष, केदार, सत्यम एवं कुलदीप सोनी को जानता है। घटना उसके न्यायालयीन अभिसाक्ष्य दिनांक 17/10/2016 से लगभग तीन-चार साल पहले की होकर शाम के सात-आठ बजे की है। साक्षी आगे कहता है कि उसके भाई सुनील के लड़के हिमांशु ने कुलदीप की दुकान पर दस सोने की मोहरे बेच दी थी। जब उन लोगों को पता चला तो वह, सुनील एवं भतीजा हिमांशु, रमाकान्त एवं हरिश्चन्द्र सभी लोग कुलदीप के घर गये। वहाँ पर उन लोगों की चर्चा हुई थी। उसके बाद वह लोग थाने गये थे, जहाँ उन लोगों के बीच राजीनामा हो गया था। वर्तमान में हिमांशु एक वर्ष से घर छोड़कर कहीं चला गया है, जिसके बारे में उसे एवं उसके पिता सुनील ने काफी मालूम किया, लेकिन उसका कोई पता नहीं चला। उसके द्वारा घटना की लेखबद्ध कराई गई रिपोर्ट प्र.पी.10 है, जिसके ए स ए भाग पर उसके हस्ताक्षर हैं। पुलिस ने घटनास्थल का मौका-नक्शा प्र.पी.04 बनाया, जिसके बी से बी भाग पर उसके हस्ताक्षर हैं। अभियोजन द्वारा पक्षद्रोही घोषित कर सूचक प्रश्न पूछे जाने पर भी गिराज किशोर अ.सा.04 ने आरोपीगण द्वारा दिनांक : 03/01/2012 को रात्रि लगभग 09:30 बजे वार्ड क्रमांक 12 बड़ा बाजार गोहद में, सहअभियुक्तगण के साथ मिलकर लाठियों से सुसज्जित होकर विधि विरुद्ध जमाव का गठन कर, उक्त विधि विरुद्ध जमाव के सामान्य उद्देश्य के अग्रसरण में बल या हिंसा कारित कर बलवा कारित करने, सहअभियुक्तगण के साथ मिलकर फरियादी आहत सुनील की मारपीट करने का सामान्य उद्देश्य बनाने और उसके अग्रसरण में अभियुक्त कुलदीप द्वारा दाँतो से सुनील को काटकर स्वेच्छया उपहति कारित करने एवं उपेक्षापूर्वक या उतावलेपन से पत्थर फैंककर फरियादी का वैयक्तिक क्षेम संकटापन्न करने का तथ्य नहीं बताया है और इस वावत् अभियोजन कथा का समर्थन नहीं किया है। इस वावत् फरियादी गिराज किशोर अ.सा.04 की न्यायालयीन अभिसाक्ष्य तथा उसके द्वारा लेखबद्ध कराई गई प्रथम सूचना सूचना प्र.पी.10 तथा उसके पुलिस कथन प्र.पी.11 के तथ्यों के मध्य ऐसे लोप है, जो विरोधाभास की प्रकृति के हैं।

09. आहत सुनील अ.सा.02 एवं हिमांशु शर्मा अ.सा.05 ने अभियोजन द्वारा पक्षद्रोही घोषित कर सूचक प्रश्न पूछे जाने पर भी आरोपीगण द्वारा दिनांक : 03/01/2012 को रात्रि लगभग 09:30 बजे वार्ड क्रमांक 12 बड़ा बाजार गोहद में, सहअभियुक्तगण के

साथ मिलकर लाठियों से सुसज्जित होकर विधि विरुद्ध जमाव का गठन कर, उक्त विधि विरुद्ध जमाव के सामान्य उद्देश्य के अग्रसरण में बल या हिंसा कारित कर बलवा कारित करने, सहअभियुक्तगण के साथ मिलकर फरियादी आहत सुनील की मारपीट करने का सामान्य उद्देश्य बनाने और उसके अग्रसरण में अभियुक्त कुलदीप द्वारा दाँतो से सुनील को काटकर स्वेच्छया उपहति कारित करने एवं उपेक्षापूर्वक या उतावलेपन से पत्थर फैंककर फरियादी का वैयक्तिक क्षेम संकटापन्न करने का तथ्य नहीं बताया है और इस वावत् अभियोजन कथा का समर्थन नहीं किया है।

10. आरोपीगण एवं फरियादी/आहत गिराज किशोर, सुनील एवं हिमांशु के मध्य राजीनामा हो जाने का तथ्य अभिलेख पर है और फरियादी गिराज अ.सा.04, सुनील अ.सा.02 एवं हिमांशु शर्मा अ.सा.05 के न्यायालयीन अभिसाक्ष्य में भी आया है। उक्त राजीनामे के तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए डॉ.आलोक शर्मा अ.सा.01 एवं विवेचक शिव कुमार शर्मा अ.सा.03 के न्यायालयीन अभिसाक्ष्य की विवेचना नहीं की जा रही है।

11. अभियोजन द्वारा इस बावत कोई अन्य साक्ष्य प्रस्तुत नहीं की गयी है जिससे यह प्रकट होता हो कि आरोपीगण ने दिनांक : 03/01/2012 को रात्रि लगभग 09:30 बजे वार्ड क्रमांक 12 बड़ा बाजार गोहद में, सहअभियुक्तगण के साथ मिलकर लाठियों से सुसज्जित होकर विधि विरुद्ध जमाव का गठन कर, उक्त विधि विरुद्ध जमाव के सामान्य उद्देश्य के अग्रसरण में बल या हिंसा कारित कर बलवा कारित किया, सहअभियुक्तगण के साथ मिलकर फरियादी आहत सुनील की मारपीट करने का सामान्य उद्देश्य बनाया और उसके अग्रसरण में अभियुक्त कुलदीप ने दाँतो से सुनील को काटकर स्वेच्छया उपहति कारित की एवं उपेक्षापूर्वक या उतावलेपन से पत्थर फैंककर फरियादी का वैयक्तिक क्षेम संकटापन्न किया।

12. अभियोजन आरोपीगण केदार, संतोष, कुलदीप, सत्यम एवं मुकेश के विरुद्ध भा.द.सं. की धारा 147, 336 एवं 324/149 का आरोप प्रमाणित करने में असफल रहा है। परिणामतः आरोपीगण को भा.द.सं. की धारा 147, 336 एवं 324/149 के अधीन दंडनीय अपराध के आरोप से दोषमुक्त कर इस मामले से स्वतंत्र किया जाता है।

13. अभियुक्तगण की उपस्थिति संबंधी प्रतिभूति एवं बंधपत्र भारमुक्त किये जाते हैं। जमानतदार को स्वतंत्र किया जाता है।

निर्णय खुले न्यायालय में हस्ताक्षरित।
एवं दिनांकित कर घोषित किया गया।

मेरे निर्देशन पर टंकित किया गया।

(पंकज शर्मा)
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, गोहद

(पंकज शर्मा)
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, गोहद